

आज गुस्वार था? (जी हाँ) गुरु भी होते हैं सदगुरु भी होते हैं। तो गुस्वार भी है तो सतगुस्वार भी है। सतगुरु वृक्षपति है और बच्चों की बृहस्पति की दशा है। इतना जरूर है पढ़ाई में फर्क पड़ता है। जो यहाँ आते हैं उनको खुशी भी होती है हम बेहद के बाप पास जाते हैं। किस लिए जाते हैं। बाबा हमको शान्तिपाम ले जावेंगे। फिर सुखपाम जावेंगे। यह भी तुम बच्चों की ही बुधि में है। कितने ढेर मनुष्य हैं। भक्ति मार्ग की कितनी सेना है। बाप से जो वरसा मिला वह अभी पूरा का भक्ति मार्ग में चक्काचूर हो पड़े हैं। ज्ञान से सदगति पाये हैं वह बिचारे भूल गये हैं। ज्ञान से तुम समझते हो यह भी पार्ट बजाते रहते हैं। सुख का भी पार्ट बजाया। दुःख का भी पार्ट बजाया। आलराउन्ड भी सभी को नहीं कहेंगे। यह भी आगे चल पता पड़ जावेगा। आलराउन्ड कितना है। सतयुग में जो आदम शुमारी होगी, आद में तो तुम भी हो। यह भी है पस्तुफर्क बहुत है। आदम शुमारी पहले पहले जो स्वर्ग में होंगी। समझा जाता है 9 लाख होगी। यह भी आगे चल का बच्चे समझते तो जरूर जावेंगे। इरादा में जो नुंघ है वह बताते जाते हैं। तुम समझते जाते हो। पहले से नहीं बता सकते हैं। भक्ति मार्ग वालों को कितनी खुशी होती है। और तुम बच्चे जब ज्ञान सुनाते हो तो वह खुशी उनको हल्की हो जाती है। तराजू में वजन करेंगे तो तुम्हारा पलड़ा भारी हो जावेगा। तुम निहोरी साल्ट हो जावेंगे। वह खोखले। खाली दुनिया और भरतु दुनिया होती है ना। देखो दोनों में कितना फर्क है। तुम अच्छी रीत जानते हो। यह है ही खाली दुनिया। कुछ है नहीं जैसे। मनुष्यों के पास तो बहुत डालर्स, पाउन्ड्स, मिलटी मिलीयन्स हैं। पस्तु, तुम जानते हो यह सभी खाली है। ऐसे भी नहीं उनका घन तीरे पास आता है नहीं। तुमको तो नई दुनिया सभी कुछ नया ही मिलेगा। सभी चीजें नई ही होंगी।



पुराने चांदी सोना आखिर मैं भी नहीं आदेंगे। इतना ऊंच पढ़ाई तुम पढ़ रहे हो = ४ हो। तो पढ़ाई पर ध्यान बहुत देना चाहिए। बुद्ध माताएं भी बहुत ऊंच पढ़ पासकती हैं। बाप जिसकी महिमा अपरअक्षर है कितना प्रेम से बैठ पढ़ते हैं। बहुत प्यारे बच्चे हैं। यह भी कहना पड़ता है नम्बरवार पुस्तकें पुस्तकें अनुसार प्यारे बच्चे। हर एक का पुस्तक अपना है। बाप है ही गरीब निवाज़। वह फिर कितने शाहुकार बनते हैं। अभी मल पदम प्रपति मनुष्य हैं परन्तु स्थाई नहीं। तुम जानते हो बाकी कितना समय यह सभी होंगे। तो नोट, चांदी आद सभी कुछ खत्म हो जावेंगे कुछ भी चलेगे नहीं। आग मैं सोना आद सभी गल जाते हैं। सरापी के दुकान को आग लग जाती है तो लोखण गेना काला बुरा हो जाता है। यह तो आग बहुत ही कड़ी है। दिल होती है पुरानी दुनिया कैसे खत्म होती है हमारे लिए। इसको देखो देखो। बाबा कैसे लायक बना कर पुरानी दुनिया खत्म करते हैं। ज्यों का त्यों स्वर्ग का भी साक्षात्कार होगा। अभी हुआ नहीं है। होने का है। अभी समय पड़ा हुआ है। पुस्तकें भी ऐसा करना चाहिए जो देखने लायक भी बनें। अभी बच्चे तो अपने को भाई भाई समझते होंगे। बाप हम भाईयों को कैसे बैठ पढ़ाते हैं। वही ज्ञान का सागर है। यह कोई अमृत पीने की चीज़ नहीं है। तुम पढ़ते हो जिस से यह ऊंच मर्तबा मिलता है। तुम संस्कार ले जाते हो नई दुनिया के लिए। तुम जानते हो हम संस्कार ले जाते हैं नई दुनिया में। बहुत फर्क है। इसलिए तुम बच्चों को आन्तरिक खुशी बहुत रहनी चाहिए। बच्चे पढ़ते हैं तो दिल में खुशी होगी ना। हम यह पढ़ते हैं। तुम बच्चों को भी नम्बरवार पुस्तकें अनुसार खुशी की महसूसता होती है। जो सर्विस करते हैं उन्होंने को बाप किमत देते रहते हैं। हर प्रकार से मदद भी बच्चों को देते रहते हैं। बाप मदद दे रहा है उसी मदद से फिर बाप के मदद कर गार बनना है।

यह भी समझते हो बाकी थोड़ा समय है फिर दुःख का नाम-निशान न रहेगा। आयु भी बड़ी होगी। तुम्हारे पास काल आ नहीं सकता। क्योंकि अमरपुरी है। वहां काल नहीं खाता। हम शरीर छोड़ दूसरा ले लेते हैं। यह पुरानी दुनिया का पुराना शरीर है। बाप की याद में पुरानी खुल को उतार धर चले जावेंगे। फिर नई दुनिया में आकर नई खल लेंगे। अन्दर में खुशी बहुत होनी चाहिए। बेहद का बाप हेरू टीचर बन हमको पढ़ाते हैं। बहुत खुशी होनी चाहिए। बाबा हमको पढ़ाते हैं। भगवानुवाच मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। सतयुग का पवित्र राजा बनाता हूं। एक आबजेक्ट भी है। बैज सदैव ही पड़ा रहे। डरो मत कि कोई ठग न लेवे। बच्चों को तो बहुत खबरदार भी रहना चाहिए। उधार पर पैसा तो देना न है। किसी को। न किसी से तुम उधार लेते ही हो। यह सभी छोड़ देना है। दुनिया में ठगी तो बहुत है। सयानी बुद्ध चाहिए हर एक से। तुम्हारे जैसा शब्द बुद्ध कोई है नहीं। कितना सारा ज्ञान तुम बच्चों की बुद्धि में है। गफ़लत करने से चीज़ गवां देंगे। पेटी गंवा देंगे। ज्ञान काल में गफ़लत नहीं होती है। बच्चे आते हैं तो सामान का बचन आद ठीक करे कराओ। ईज्जत न जाये। तुम्हारी ईज्जत तो बहुत ऊंची है। उनकी ईज्जत तो सेकड़ में काल आकर उतार सकती है। तुम्हारी ईज्जत थोड़ी हो कोई उतार सकते। तो दिल से पूछना चाहिए हम इतने खुशी में हैं। बाप बुद्धियों को भी तो जवानों को भी पढ़ाते हैं। सिर्फ ममत्व निकाल देना है। इन आंखों से देखने वाला चीज़ में ममत्व न खाना है। बुद्धि शान्तिधाम सुखधाम तरफ हो। अपना घर अपनी राजाई। तुम खुद ही अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। हिंसा का नाम निशान नहीं। बच्चे समझते हैं बाबा कितना दूर से आते हैं। कल्याण करी बाप कल्याणकारी समय पर आते हैं। कल्याणकारी है ही संगम युग। सतयुग की स्थापना बाप ही करते हैं। 84 जन्म ले हम नीचे आते हैं। बाप और बच्चों को भेला बहुत वेत्युबुल है। बाप की भी दिल होती है जहाँ परन्तु कोई कारण है जस। बच्चों में सर्विस ब्रह्म शोक होना है। ऐसे 2 बच्चों को देख दिल खुशी होती है। अच्छी बच्चों को गुडनाईट नमस्ते।